eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

श्रीदेव सुमन – भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के एक प्रकाश पुंज

[1]रचित कुमार
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, युवराज दत्त महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी, उ0प्र0

Received: 21 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में एक महान हस्ती श्रीदेव सुमन ने स्वतंत्रता के लिए देश के संघर्ष की दिशा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 22 जून, 1892 को हिमालय क्षेत्र के विचित्र शहर बागेश्वर में जन्मे सुमन एक गतिशील नेता के रूप में उभरे, जिनकी स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता ने कई लोगों को प्रेरित किया। यह सारांश श्रीदेव सुमन के बहुमुखी योगदान, उनके प्रारंभिक जीवन, राजनीतिक जागृति, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी को प्रेरित किया, और भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य पर उनके द्वारा छोड़े गए स्थायी प्रभाव की पड़ताल करता है।

शब्द संक्षेप– एक व्यक्तित्व, श्रीदेव सुमन, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, एक प्रकाश पुंज।

Introduction

श्रीदेव सुमन की जीवन यात्रा औपनिवेशिक शासन की मार से जूझ रहे एक उभरते हुए भारत की पृष्ठभूमि में सामने आई। राष्ट्रवाद की भावना से ओत–प्रोत वातावरण में पले–बढ़े सुमन ने कम उम्र से ही आत्मनिर्णय और सामाजिक न्याय के आदर्शों को आत्मसात किया। उनकी शैक्षिक गतिविधियाँ उन्हें प्रतिष्ठित संस्थानों के द्वार तक ले गईं, जहाँ उन्होंने न केवल अपने शैक्षणिक कौशल को बल्कि अपने देश के प्रति जिम्मेदारी की गहरी भावना को भी निखारा। जैसे ही पूरे भारत में राष्ट्रवाद की लहर तेज हुई, श्रीदेव सुमन ने खुद को उन राजनीतिक धाराओं की ओर आकर्षित पाया जो साम्राज्यवादी को खत्म करना चाहती थीं। भवन. राजनीतिक क्षेत्र में उनकी शुरूआत उनके कॉलेज के वर्षों के दौरान हुई जब वे भारत की नियति पर केंद्रित चर्चाओं और बहसों में सक्रिय भागीदार बन गए। महात्मा गांधी जैसे प्रमुख नेताओं की शिक्षाओं से प्रभावित होकर, सुमन का राजनीतिक दर्शन विकसित हुआ, जिसमें अहिंसा, सविनय अवज्ञा और हाशिए पर मौजूद लोगों के सशक्तिकरण के सिद्धांतों को अपनाया गया।

श्रीदेव सुमन के जीवन में निर्णायक क्षणों में से एक 1920–22 के असहयोग आंदोलन में उनकी भागीदारी थी, एक महत्वपूर्ण घटना जिसने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक आदर्श बदलाव को चिह्नित किया। अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति को पहचानते हुए, सुमन ब्रिटिश संस्थानों और उत्पादों के बहिष्कार के प्रबल समर्थक बन गए। उनका करिश्मा और वक्तृत्व कौशल तब सामने आया जब उन्होंने सभाओं को संबोधित किया और लोगों को अटूट दृढ़ संकल्प के साथ इस उद्देश्य में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सामाजिक सुधार के प्रति श्रीदेव सुमन की प्रतिबद्धता जाति–आधारित भेदभाव को खत्म करने और सशक्तिकरण के साधन के रूप में शिक्षा को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों में स्पष्ट थी। उन्होंने माना कि उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई आंतरिक रूप से सामाजिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

न्याय और समानता की व्यापक खोज से जुड़ी हुई थी। सुमन की दृष्टि राजनीतिक मुक्ति से परे तक फैली हुई थी; उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां स्वतंत्रता का फल जाति, पंथ और लिंग की बाधाओं को पार करते हुए हर वर्ग तक पहुंचे। वर्ष 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत के साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। जोखिमों से घबराए बिना, श्रीदेव सुमन ने नमक कानूनों की अवहेलना में सक्रिय रूप से भाग लिया, मार्च का नेतृत्व किया और गिरफ्तारी दी। विपरीत परिस्थितियों में उनके अटूट संकल्प और साहस ने उन्हें साथी स्वतंत्रता सेनानियों और आम नागरिकों की समान रूप से प्रशंसा दिलाई। सविनय अवज्ञा आंदोलन में सुमन की भूमिका ने उन्हें राष्ट्रीय सुर्खियों में ला दिया, जिससे एक सशक्त नेता के रूप में उनकी स्थिति मजबूत हो गई।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन ने श्रीदेव सुमन की अदम्य भावना में एक और अध्याय जोड़ा। जैसे ही ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान पूरे देश में गूंजने लगा, सुमन आंदोलन के एक दृढ़ समर्थक के रूप में उभरे। उनके नेतृत्व ने जनता को प्रेरित किया, जिससे व्यापक विरोध और प्रदर्शन हुए। ब्रिटिश अधिकारियों ने सुमन के प्रभाव की शक्ति को पहचानते हुए, उन्हें कैद करके उनकी गतिविधियों को दबाने की कोशिश की। हालाँकि, सलाखों के पीछे भी, श्रीदेव सुमन प्रेरणा के प्रतीक बने रहे, अपने साथी कैदियों को प्रेरित करते रहे और आंदोलन की गति को बनाए रखा। स्वतंत्रता के बाद, श्रीदेव सुमन का योगदान राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में फैल गया। जमीनी स्तर पर विकास की आवश्यकता को पहचानते हुए, उन्होंने खुद को उन पहलों में शामिल कर लिया जिनका उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक उत्थान था। एक विधायक के रूप में, उन्होंने नव स्वतंत्र राष्ट्र के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने वाली नीतियां बनाने के लिए अथक प्रयास किया। कृषि सुधारों, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के लिए सुमन की वकालत ने उन्हें जनता का प्रिय बना दिया, जिससे उन्हें "पीपुल्स लीडर" का उपनाम मिला। अंत में, हिमालयी शहर बागेश्वर से भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में सबसे आगे तक श्रीदेव सुमन की यात्रा व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास और सामूहिक आकांक्षाओं की शक्ति का एक प्रमाण है। स्वतंत्रता, न्याय और समानता के सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने भारत के सामाजिक–राजनीतिक ढांचे पर एक अमिट छाप छोड़ी। सुमन की विरासत भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कायम है, जो उन्हें उन बलिदानों और संघर्षों की याद दिलाती है जिन्होंने स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत का मार्ग प्रशस्त किया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है। एक लंबे संघर्ष के पश्चात हमें ब्रिटिश हुकूमत से आजादी मिली। इस आजादी को दिलवाने में कई बड़ी संस्थाओं और व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वहीं जब हम इतिहास की ओर दृष्टि करते हैं तो यह पाते हैं कि बड़ी–बड़ी संस्थाओं और बड़े व्यक्तियों के बारे में हमने विस्तृत तौर पर चर्चा की लेकिन कुछ ऐसे व्यक्तित्व सिमट कर ही रह गए जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित कर दिया उन्हीं में से एक स्वतंत्रता सेनानी है "श्री देव सुमन"। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य श्री देव सुमन के जीवन कृतित्व, राष्ट्रीय आंदोलन में उनके योगदान पर दृष्टिपात करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन के एक अकीर्तित नायक का स्मरण करना और जिज्ञासु जनों का श्री देव सुमन से साक्षात्कार स्थापित कराना है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

श्री देव सुमन का संबंध मुख्यतः टिहरी गढ़वाल से है। उस समय वहां पर राजा नरेंद्र शाह का शासन था। श्री देव सुमन ने वहां की जनता को कैसे राजशाही के प्रभाव से मुक्त कराया और वहां राष्ट्रीय आंदोलन की अलख जगाई तथा उनके प्रयासों से ही वहां पर प्रजामंडल की स्थापना हुई।

25 मई 1916 टिहरी गढ़वाल के जौल गांव के काफी लोकप्रिय वैद्य हरिराम बड़ौनी तथा तारा देवी के घर श्रीदत्त बडोनी का जन्म हुआ। जब वे 3 वर्ष के थे तब उनके जोलगांव और उनके आसपास के इलाके में हैजा नामक महामारी फैल गई इस महामारी से पार पाने के लिए और अपने गांव वालों की मदद करने के लिए अपनी परवाह किए बिना हरिराम बडोनी ने लोगो की सेवा करनी शुरू कर दी उनका इलाज करना शुरू कर दिया लेकिन दुर्भाग्यवश वे खुद इस बीमारी की चपेट में आ गए और उनका देहावसान हो गया। सुमन की प्रारंभिक शिक्षा उनके गांव के पास के ही चंबाखाल प्राइमरी स्कूल में हुई। 1929 आतेदृआते उन्होंने अपनी हिंदी मिडिल स्कूल परीक्षा टिहरी मिडिल स्कूल से पास कर ली। और अपनी आगे की पढ़ाई के लिए वे टिहरी से निकलकर देहरादून आ गए।

इसी बीच अक्टूबर 1929 में गांधीजी पहली बार देहरादून आए हालाकी उस समय श्री देव सुमन उनसे मिल तो नहीं पाए लेकिन उनकी विचारधारा ने उन्हें बहुत ही ज्यादा प्रभावित किया और देहरादून की जनता के साथ–साथ वे भी अप्रत्यक्ष तौर पर राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जुड़ गए। 12 मार्च 1930 को गांधी जी द्वारा नमक सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया गया और इसी क्रम में देश के अलग अलग हिस्सों में यह आंदोलन चलाया गया। देहरादून की जनता ने भी इस आंदोलन बढ़ चढ़कर भाग लिया और इसी दौरान श्री देव सुमन को नमक बनाते हुए पकड़ लिया गया और उन्हें 14 दिन की जेल हुई। 1931–32 में देहरादून में अपनी पढ़ाई के दौरान वे नेशनल हिंदू स्कूल में भी पढ़ाने लगे। इसके साथ ही उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी से रत्न, भूषण तथा प्रभाकर नामक परीक्षा पास की और हिंदी साहित्य सम्मेलन से उन्होंने विशारद और साहित्य रत्न जैसी परीक्षा पास करने के उपरांत भाषा पर उनकी पकड़ मजबूत हो गई और उन्होंने दिल्ली में देवनागरी महाविद्यालय की स्थापना की। अपने भाई परमानंद के साथ उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया जिसमें उन्होंने हिंदू, धर्मराज,राष्ट्रमत और कर्मभूमि जैसे पत्रों के प्रकाशन में महती भूमिका निभाई। 17 जून 1937 को "सुमन सौरभ" नाम से उनकी कुछ रचनाएं भी प्रकाशित हुई।

इसी दौरान दिल्ली में उनकी मुलाकात काका कालेलकर एवम जाकिर हुसैन जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से हुई। काका कालेलकर उनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्हें वर्धा महाराष्ट्र ले गए जहां पहली बार सुमन की मुलाकात गांधी जी से हुई। वर्धा में 5–6 महीने रहने के पश्चात वे शिमला चले गए और वहां उन्होंने हिंदीसाहित्य स्वागतकर्णी समिति की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साल 1938 उनके जीवन का महत्वपूर्ण वर्ष रहा इसी समय टिहरी की जनता को राजशाही के अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने 22 मार्च 1938 को दिल्ली में गढ़देश सेवा संघ की स्थापना की जो बाद में हिमालय सेवा संघ के नाम से जाना गया। इसी समय मई 1938 में श्रीनगर गढ़वाल में कांग्रेस का जिला राजनीति सम्मेलन हुआ जिसमें जवाहरलाल नेहरू,उनकी बहन विजय लक्ष्मी पंडित जैसे कई बड़े नेताओं ने भाग लिया इस सम्मेलन में सुमन ने टिहरी की समस्याओं को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

सबके समक्ष रखा। इस समय उन्होंने गढ़वाल की एकता को बनाए रखने का नारा बुलंद किया और कहा। "यदि गंगा हमारी माता होकर भी हमें आपस में मिलाने के बजाय दो हिस्सों में बांटती है तो हम गंगा को काट देंगे"।

23 जनवरी 1939 को टिहरी राज्य प्रजामंडल की स्थापना हुई और उसका संयोजक श्री देव सुमन को बनाया गया। प्रजामंडल की स्थापना के समय श्री देव सुमन ने अपने निम्न विचारों के माध्यम से लोगों को उद्‌बोधित किया–"यदि हमें मरना ही है तो अपने सिद्धांतों और विश्वास की सार्वजनिक घोषणा करते हुए मरना श्रेयेष्कर है"।अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद के लुधियाना में होने वाले अधिवेशन में श्री देव सुमन ने प्रजामंडल के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया और उन्होंने टिहरी रियासत और अन्य हिमालयाई राज्यों की समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। इस समय टिहरी राज्य की राजधानी नरेंद्र शाह नगर था।आगे चलकर उन्होंने हिमालय प्रांतीय राज्य परिषद की स्थापना की तथा इसके साथ ही उन्होंने हिमालई राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना वाराणसी में गई तथा वहां से "हिमाचल" नामक पत्रिका छपवाकर टिहरी के लोगों तक पहुचाई जिससे लोगो में राजशाही के प्रति विद्रोह और राष्ट्रवाद की भावना का विकास हुआ।

सुमन के इस प्रकार की बढ़ती आंदोलनकारी गतिविधियों को देखते हुए वहां के राजा नरेंद्र शाह ने उनकी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए "सभाबंदी कानून" (रजिस्ट्रेशन ऑफ एसोसिएशन एक्ट) पारित किया जिसके द्वारा अब कोई भी संस्था टिहरी में वैद्य नहीं रही और न ही किसी नई संस्था का गठन किया जा सकता था और न ही कोई संस्था बगैर राजा की अनुमति के काम कर सकती थी।1940 में सुमन ने इस एक्ट को वापस लेने की मांग राजा और उसके अधिकारियों से की लेकिन इसका कोई असर नही हुआ।19 मार्च 1941 को प्रजामंडल का विशेष अधिवेशन देहरादून में हुआ जिसमें उन्होंने कहा चाहे कुछ भी हो जाए टिहरी राज्य के भीतर प्रजामंडल की स्थापना होनी ही चाहिए। 30 अप्रैल 1941 को जब गांव पहुंचे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया करो और 2 दिन नजरबंद करने के बाद ही उन्हें छोड़ा गया। अगस्त 1942 में देश में भारत छोड़ो आंदोलन का बिगुल बज चुका था। इस आंदोलन को पहाड़ी राज्य तक पहुंचाने के लिए सुमन भी वापस आ गए लेकिन उन्हें 29 अगस्त 1942 को देवप्रयाग में फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। सबसे पहले उन्हें ऋषिकेश की जेल में 10 दिन की, देहरादून की जेल में ढाई महीने तथा 1 साल तक आगरा की सेंट्रल जेल में कैद रखा गया। इस समय टिहरी राज्य की तानाशाही के बारे में जवाहरलाल नेहरू ने कहा दृ"इन कृत्य से टिहरी राज्य के कैदखाने दुनिया भर में मशहूर होंगे लेकिन इससे दुनिया में रियासत की कोई इज्जत नहीं बढ़ेगी"।

19 नवंबर 1943 को उन्हें फिर से रिहा किया गया लेकिन टिहरी में उनके आने पर रोक लगा दी गई। इस समय उन्होंने कहा

"मैं अपने शरीर के कण–कण को नष्ट हो जाने दूंगा लेकिन टिहरी के नागरिक अधिकारों को कुचलने नहीं दूंगा"।

27 दिसंबर से 1943 को जैसे ही उन्होंने टिहरी में प्रवेश किया चंबल खाल में उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और 3 दिन बाद 30 दिसंबर 1943 को टिहरी जेल में बंद कर दिया गया और उनसे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

माफी मागे को कहा गया उन्होंने इसका जवाब इस प्रकार दिया कीदृ"तुम मुझे तोड़ सकते हो मोड़ नही सकते"। 21 फरवरी 1944 को उन पर राजद्रोह का मुकदमा लगाया गया जिसमे उन्होंने अपने पैरवी खुद की और कहा

"मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि जहां मैं अपने भारत देश के लिए पूर्ण स्वाधीनता के ध्येय में विश्वास करता हूं वही टिहरी राज्य में मेरा और प्रजामंडल का उद्देश्य वैद्य और शांतिपूर्ण उपायों से महाराज की छत्रछाया में उत्तरदाई शासन प्राप्त करना और सेवा के साधनों द्वारा राज्य की सामाजिक आर्थिक सब प्रकार की उन्नति करना है हां मैंने राजा की भावनाओं के विरुद्ध काले कानूनों और कार्यो की अवश्य आलोचना की है और इसे में प्रजा का जन्म सिद्ध अधिकार समझता हूं।

उन्हें 2 साल की जेल और 200 रुपए के जुर्माने की सजा सुनाई गई।29 फरवरी 1944 को वे फिर से अनशन पर बैठ गए और उन्होंने अपने इस अनशन को समाप्त करने के लिए जेल प्रशासन तथा राजा के समक्ष तीन मांगे रखीः

1– प्रजामंडल को वैधानिक संगठन माना जाए।

2– उन्हें जेल से पत्राचार की आजादी हो।

3– उन पर लगे झूठे मुकदमे की सुनवाई खुद महाराज करें।

1 महीने के इंतजार के बाद भी जब उनकी कोई भी मांग राजा द्वारा नहीं मानी गई तो उन्होंने फिर से 3 मई 1944 को आमरण अनशन की घोषणा कर दी और जिससे उनका स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता जा रहा था इस सबको देखते हुए जनता में आक्रोश की भावना बढ़ती चली गई और इस विद्रोह की भावना को रोकने के लिए जेल प्रशासन द्वारा यह झूठी सूचना जनसामान्य तक पहुंचाएगी कि वे राजा के जन्मदिन के अवसर पर 4 अगस्त को सुमन को रिहा कर देंगे।उनकी हालत लगातार बिगड़ती चली गई 20 जुलाई 1944 को वे बेसुध हो गए और इसी अवस्था में वो 25 जुलाई 1944 को 84 दिन के लम्बे अनशन के बाद शहीद हो गए। जेल प्रशासन के द्वारा बाद में उनके पार्थिव शरीर को भागीरथी और भिलंगाना नदी के संगम पर फेंक दिया गया जब जनता को इस बात की खबर हुई तो सीधे तौर पर जनता ने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।यह सुमन के प्रयासों का ही परिणाम रहा की बाद में प्रजामंडल को आखिरकार राजा को वैधानिक संगठन मानना ही पड़ा और मई 1947 में प्रजामंडल का प्रथम वार्षिक अधिवेशन टिहरी में संपन्न हुआ। उनके कार्यों आंदोलनों और उनके बलिदान को याद करने के लिए "25 जुलाई" को हर साल "सुमन दिवस" के रूप में मनाया जाता है। और टिहरी में कई संस्थानों, अस्पतालों और विश्वविद्यालयों का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है।15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया लेकिन तब टिहरी भारतीय गणराज्य का हिस्सा नहीं था पर वहा की जनता की राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना ने 1अगस्त 1949 को टिहरी को भारतीय गणराज्य का हिस्सा बना दिया।

ऐसे महान स्वतंत्रता सेनानी का जीवन, उनकी देशभक्ति की भावना और राष्ट्र के लिए उनका बलिदान हम सबके लिए और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिय सदैव प्रेरणादाई रहेगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

संदर्भ सूची–

1– सतीश उमाशंकर, 2013 स्वाधीनता संग्राम में श्री देव सुमन की भूमिका,विंसर पब्लिकेशन

2– पाठक शेखर, दास्तान ए हिमालय भाग २, वाणी प्रकाशन पेज 190–200,

3– बहुगुणा मुकेश, 2018, भारत भ्रमण, राजमंगल पब्लिशर्स,

4– रूप नारायण, 2003, स्वाधीनता संग्राम के सुनहरे प्रसंग, प्रभात प्रकाशन,

5. कुमार प्रदीप, 2000, दी उत्तराखंड मूवमेंट कंस्ट्रक्शन ऑफ रीजनल आइडेंटिटी, कनिष्का पब्लिशर्स

6– वेबर थॉमस, 2004,गांधी ऐस डिसिपल – मेंटर, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

7– हांडा ओमकांडा, 2002, हिस्ट्री ऑफ उत्तरांचल, इंडस पब्लिशिंग

8– जॉर्ज अल्फ्रेड जेम्स, 2020, इकोलॉजी इज परमानेंट इकोनॉमीः दी एक्टिविज्म – एनवायरनमेनेटल फिलॉस्फी ऑफ़ सुंदरलाल बहुगुणा, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस

9– डंगवाल, बी.एस. श्री देव सुमनः जीवन और क्रांति